डम डम डीगा डीगा, मौसम भीगा भीगा

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिंदी फिल्मों में यूँ तो संगीतकारों की कई लोकप्रिय जोड़ियां हुईं हैं , लेकिन दो सगे भाइयों कल्याणजी वीर जी शाह और आनंदजी वीरजी शाह की लोकप्रिय जोड़ी 'कल्याण जी-आनंद जी' ने अपने संगीत की मौलिकता, विविधता, प्रयोगशीलता और लोकप्रियता के दम पर न केवल फ़िल्म जगत में एक ऊँचा मुकाम हासिल किया बल्कि बाद में आने वाले नये संगीतकारों को भी काफ़ी प्रभावित किया. यह जोड़ी फिल्मों को मधुर,भावपूर्ण और विविध रंगों से पूर्ण संगीत देने के लिए जानी जाती है. इन्होंने अपने संगीत में शास्त्रीय संगीत, लोकधुनों, पाश्चात्य वाद्यों का बेहतरीन संतुलन स्थापित किया. यही कारण है कि उनका संगीत आज भी नवीन, आकर्षक और प्रिय लगता है.

गुजरात के कच्छ से निकलकर दुनिया के दिलों तक पहुँचने वाली इस जोड़ी के संगीतकार बनने की कहानी काफ़ी रोचक है. कल्याणजी आनंद जी के पिता वीरजी शाह का परिवार ज़ब कच्छ से मुंबई आया तो उन्होंने यहां किराने की दुकान खोल ली. उनके दुकान से एक ग्राहक सामान तो लेता था लेकिन उधार के पैसे नहीं चुका पा रहा था. वीर जी ने जब उससे तकाजा किया तो उसने उधारी चुकाने के बदले वीरजी के दोनों बेटों कल्याणजी और आनंदजी को मुफ्त में संगीत सिखाने का जिम्मा संभाला और इस तरह इस उधारी के पैसे से एक महान संगीतकार जोड़ी की नींव पड़ी.

कल्याणजी ने अपने करियर की शुरुआत एक वादक के रूप में की थी . हेमंत कुमार के संगीत से सजी फिल्म 'नागिन' (1954) में जो मशहूर 'बीन' की धुन सुनाई देती है, उसमें कल्याणजी ने 'क्लैवायलिन नामक इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र बजाया था, जो एक नया प्रयोग था. शुरू में कल्याणजी ने अकेले संगीत देना शुरू किया, उनकी पहली फिल्म 'सम्राट चंद्रगुप्त' (1958) थी. जल्द ही आनंदजी भी उनके साथ जुड़ गए . जब ये लोग फ़िल्मी दुनिया में आये तो उस वक्त एसडी बर्मन, हेमंत कुमार, मदन मोहन, नौशाद, ओ पी नैयर, शंकर -जय किशन जैसे महान संगीतकार मौजूद थे, ऐसे में उनके लिए अपना मुकाम बना पाना वाकई मुश्किल काम था लेकिन अपनी प्रतिभा और लगन के दम पर उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई . शुरुआती संघर्ष के बाद इस जोड़ी को 1960 में आई मनमोहन देसाई की फिल्म 'छलिया' ने कामयाबी के शीर्ष पर पहुंचा दिया. इस फ़िल्म के गीत 'छलिया मेरा नाम', 'डम डम डीगा डीगा', 'मेरे टूटे हुए दिल से', 'तेरी राहों में खड़े हैं' ने धूम मचा दी, ये गीत आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं.

कल्याणजी-आनंदजी ने अपने 40 साल के करियर में लगभग 250 फिल्मों में संगीत दिया. जिसमें से 17 फिल्में गोल्डन जुबली और 39 फिल्में सिल्वर जुबली रहीं. उनकी कई फिल्में संगीत की दृष्टि से मील का पत्थर मानी जाती हैं, उन्होंने सामाजिक, भावनात्मक, रोमांटिक और एक्शन फिल्मों—सभी प्रकार की फिल्मों में यादगार संगीत दिया. फ़िल्मकार प्रकाश मेहरा

के साथ कल्याणजी आनंदजी का शानदार गठबंधन रहा जिसने 'हसीना मान जाएगी', 'हाथ की सफाई',' हेराफेरी', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'लावारिस' जैसी कई सफल फ़िल्में दीं. उनका फ़िरोज़ ख़ान के साथ किया हुआ काम भी बड़ा लोकप्रिय हुआ. इस तिकड़ी ने 'धर्मात्मा', 'क़ुर्बानी' और 'जाँबाज़' जैसी हिट फ़िल्में दी. इसके अलावा हिमालय की गोद में, सट्टा बाज़ार, सरस्वतीचंद्र, सफ़र, जब जब फूल खिले, दूल्हा दुल्हन, उपकार, पूरब पश्चिम, हमराही, उपासना, मेरे हमसफ़र, सच्चा झूठा, गीत, समझौता, जानी मेरा नाम, कोरा कागज, हेराफेरी, अदालत, डॉन, विधाता, त्रिदेव आदि कल्याणजी आनंदजी की यादगार फ़िल्में हैं .

उनके संगीत में काफ़ी विविधता है, उन्होंने गंभीर गीतों से लेकर चंचल गीतों तक हर प्रकार का संगीत रचा . उनके गीतों में प्रेम, मिलन, जुदाई, पीड़ा, आशा, दर्शन आदि जीवन के सारे रंग मिलते हैं. उन्होंने ऐसे गीत दिए जो केवल फिल्मी गीत नहीं रहे, बल्कि लोगों की स्मृतियों में सदा के लिये बस गये . इस जोड़ी के अमर गीतों में 'हम ने तुझको प्यार किया', 'जो प्यार तू ने मुझको दिया था' (दूल्हा दुल्हन), 'वक़्त करता जो वफ़ा' (दिल ने पुकारा), 'ज़िंदगी का सफर है ', 'जीवन से भरी तेरी आँखें मजबूर करें', 'नदिया चले चले रे धारा' (सफ़र),' चंदन सा बदन चंचल चितवन', 'फूल तुम्हें भेजा है ख़त में', 'मैं तो भूल चली बाबुल का देश ', 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के' (सरस्वतीचंद्र), 'मेरे देश की धरती सोना उगले' (उपकार), 'कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे', 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' (पूरब और पश्चिम) , 'तेरे चेहरे में वो जादू है' (धर्मात्मा), 'जिस पथ पे चला उस पथ पे मुझे' (यादगार), 'मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया', 'दिल सच्चा और चेहरा झूठा' (सच्चा झूठा), 'मेरा जीवन कोरा कागज' (कोरा कागज),'हम छोड़ चले हैं महफ़िल को '(जी चाहता है), 'समझौता ग़मों से कर लो' (समझौता), 'परदेसीयों से न अखियाँ मिलाना', 'ये समा समय है ये प्यार का' (जब जब फूल खिले)' 'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले', 'नफरत करने वालों के सीने में' (जानी मेरा नाम) 'वादा करले साजना' (हाथ की सफाई), 'बहिना ओ बहिना तेरी डोली' (अदालत), 'खइके पान बनारस वाला' (डॉन), 'ओ साथी रे तेर और 'सलाम-ए-इश्क' (मुकद्दर का सिकंदर), 'जिसका क़ोई नहीं उसका तो खुदा है, 'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम, (लावारिस), 'हर किसी को नहीं मिलता यहाँ प्यार ज़िन्दगी में ', 'प्यार दो प्यार लो' (जांबाज़) और 'आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी' (क़ुर्बानी), 'नीले नीले अम्बर पे' (कलाकार) जैसे लोकप्रिय गीत शामिल हैं.

कल्याणजी-आनंदजी ने संघर्ष के दिनों में वाद्य-संगीत, ऑर्केस्ट्रेशन और धुनों की रचना के क्षेत्र में बहुत मेहनत की. उनकी यही मेहनत बाद में उनकी विशिष्ट पहचान बनी. कल्याणजी ने अपने प्रारंभिक दौर में संगीत संयोजन और वादन के क्षेत्र में काम किया. वाद्य यन्त्र क्लैवायलिन के प्रयोग ने उन्हें विशेष पहचान दिलाई. उस समय हिंदी फिल्म संगीत में नए प्रयोगों की शुरुआत हो रही थी और कल्याणजी ने इस दिशा में अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया. वे किसी एक शैली तक सीमित नहीं थे. वे प्रेमगीत, विरह गीत, भजन, कव्वाली, नृत्यगीत, देशभक्ति गीत, लोक-आधारित धुनें और आधुनिक लय पर आधारित गीत—सभी में उन्हें समान महारत हासिल थी . इस जोड़ी ने कई प्रसिद्ध गीतकारों के साथ काम किया और कई अविस्मरणीय गीत दिए, विशेष कर गीतकार इंदीवर के साथ तो उन्होंने कमाल के गीत रचे, इसी तरह उन्होंने बड़े गायकों की विशिष्टताओं को पहचानकर उनसे श्रेष्ठतम प्रस्तुति ली. उनकी संगीत-रचना में तकनीकी दक्षता और भावात्मक संवेदना का बेहतरीन मेल मिलता है. कल्याणजी-आनंदजी केवल फिल्म संगीत तक सीमित नहीं रहे. उन्होंने मंचीय प्रस्तुतियों के माध्यम से भी संगीत को लोकप्रिय बनाया. वे नए गायकों और कलाकारों को अवसर देने के लिए भी जाने जाते थे . उन्होंने मनहर उधास, कुमार सानू, उदित नारायण और साधना सरगम जैसे कई गायकों को पहला ब्रेक दिया, साथ ही उनके बाद आने वाले अनेक संगीतकारों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनकी शैली से प्रेरणा ली. उल्लेखनीय है कि प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने भी 1953 से 1963 तक कल्याणजी-आनंदजी के सहायक के रूप में काम किया था .

कल्याणजी-आनंदजी को हिंदी फिल्म संगीत में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई सम्मान मिले. 1968 में उन्हें फ़िल्म 'सरस्वती चंद्र 'के लिये सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला. इसी प्रकार फ़िल्म कोरा कागज (1974) के लिये उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार मिला.आज भी जब हिंदी फिल्म संगीत के स्वर्णिम युग की चर्चा होती है, तब कल्याणजी-आनंदजी का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता है. आज की बात यहीं तक,अगले सप्ताह फिर मिलेंगे, तब तक इस जोड़ी के दिलकश गीतों का आनंद लीजिये .

रणवीर सिंह की फिल्म ने मचाई तबाही

7 दिन में 623 करोड़ का रिकॉर्ड

रणवीर सिंह की फिल्म धुरंधर- द रिवेंज बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन करते हुए लगातार नए रिकॉर्ड बना रही है. फिल्म ने अपने पहले ही सप्ताह में भारतीय बाजार में 623 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर ली है, जो इसे साल की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में शामिल कर रहा है. आदित्य धर के निर्देशन में बनी इस फिल्म को दर्शकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है. यह फिल्म पहले आई ब्लॉकबस्टर धुरंधर की सीक्वल है, और इसकी कहानी, एक्शन और दमदार परफॉर्मेंस ने दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचने में बड़ी भूमिका निभाई है.

फिल्म में रणवीर सिंह के साथ आर माधवन, अर्जुन रामपाल, संजय दत्त, राकेश बेदी और सारा अर्जुन जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं, जिनकी एक्टिंग की भी खूब तारीफ हो रही है.

सैकनिल्क के आंकड़ों के मुताबिक, फिल्म ने रिलीज से पहले ही पेड प्रीव्यू में 18 मार्च को 43 करोड़ रुपये की कमाई कर ली थी. इसके बाद 19 मार्च को रिलीज के पहले दिन फिल्म ने 102.55 करोड़ का जबरदस्त कलेक्शन किया. दूसरे दिन 80.72 करोड़ और तीसरे दिन 113 करोड़ रुपये की कमाई ने फिल्म की सफलता को और मजबूत कर दिया.

चौथे दिन फिल्म ने 114.85 करोड़ रुपये का शानदार बिजनेस किया, जबकि पांचवें दिन 65 करोड़, छठे दिन 56.60 करोड़ और सातवें दिन 47.70 करोड़ रुपये का कलेक्शन दर्ज किया गया. इस तरह पहले हफ्ते में ही फिल्म ने कुल 623.42 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है. फिल्म की लगातार बढ़ती कमाई से साफ है कि दर्शकों के बीच इसका क्रेज अभी भी बरकरार है. ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि आने वाले दिनों में भी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर मजबूत पकड़ बनाए रख सकती है और 700 करोड़ के आंकड़े को भी जल्द पार कर सकती है.

यामी गौतम ने बदली 'ए-लिस्ट' की परिभाषा

बॉलीवुड अभिनेत्री यामी गौतम को लेकर एक बार फिर चर्चा तेज हो गई है. हाल ही में फिल्म धुरंधर- द रिवेंज की शानदार सफलता के बाद फिल्म इंडस्ट्री में उनकी स्थिति को लेकर नई बहस शुरू हो गई है. रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म निर्माता करण जौहर, जो पहले यामी गौतम को 'ए-लिस्ट' अभिनेत्रियों में नहीं मानते थे, अब उनके प्रति अपना नजरिया बदलते नजर आ रहे हैं. पहले हक और फिर धुरंधर की सफलता ने पूरे इंडस्ट्री को इस समय हिला कर रख दिया है. ऐसे में हर कोई यामी गौतम और उनके पति आदित्य धर की तारीफ करने से नही थक रहे.अब इसमें एक नाम करण जौहर का भी हैं.

दरअसल एक दौर था जब करण जौहर ने यामी गौतम को अपने फेमस टॉक शो कॉफी विद करण में बुलाने से साफ इनकार कर दिया था, क्योंकि उनकी नजर में यामी तब ए-लिस्ट एक्ट्रेसेस की लिस्ट में नहीं आती थीं. लेकिन समय का पहिया ऐसा घूमा कि आज वही करण जौहर सार्वजनिक मंच पर यामी को गले लगाते और उनकी तारीफों के पुल बांधते नजर आ रहे हैं. साल 2017 की है, जब फिल्म काबिल रिलीज होने वाली थी. सुपरस्टार ऋतिक रोशन ने कॉफी विद करण के मेकर्स से गुजारिश की थी कि फिल्म के प्रमोशन के लिए उनकी को-स्टार यामी गौतम को भी शो पर बुलाया जाए. लेकिन उस वक्त करण जौहर और उनकी टीम ने ऋतिक से कहा कि वे अकेले आना चाहें तो आ सकते हैं, लेकिन यामी को शो में जगह नहीं मिल सकती. क्योंकि उस समय यामी को बॉलीवुड के बड़े क्लब का हिस्सा नहीं माना जाता था. हालांकि ऋतिक ने भी सम्मान दिखाते हुए शो पर जाने से मना कर दिया था.

अब समय का पहिया ऐसा बदला कि यामी गौतम की फिल्म हक को न सिर्फ क्रिटिक्स ने सराहा, बल्कि दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला. वहीं दूसरी तरफ,उनके पति आदित्य धर की फिल्म धुरंधर 2 बॉक्स ऑफिस पर सारे पुराने रिकॉर्ड ध्वस्त कर रही है. ये ही वजह है कि अब करण फिल्म हक देखने के बाद खुद को यामी का लाइफलॉन्ग फैन बता रहे हैं.

सिर्फ यही नहीं, उरी- द सर्जिकल स्ट्राइक के प्रमोशन के दौरान एक रियलिटी शो में भी करण जौहर और दूसरे जजों ने कथित तौर पर यामी को नजरअंदाज किया था.

गीतकार चिप टेलर का 86 वर्ष में निधन

ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामांकित गायक-गीतकार चिप टेलर का 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया. उन्हें उनके हिट गीतों वाइल्ड थिंग और एंजल ऑफ द मॉर्निंग के लिए जाना जाता है. उनके बच्चों क्रिस और केली ने गुरुवार को एक बयान में अपने पिता के निधन की घोषणा की. चिप टेलर का वास्तविक नाम जेम्स वेस्ली वॉयट था, वह जॉन वॉयट के भाई और हॉलीबुड अभिनेत्री एंजेलिना जोली के चाचा थे. उनकी कथित रूप से सोमवार रात को हॉस्पिस केयर में मौत हो गई. चिप का जन्म 21 मार्च, 1940 को न्यूयॉर्क के योंकर्स शहर में जेम्स वेस्ली वॉयट के रूप में हुआ था. उन्होंने और उनके भाइयों ने न्यूयॉर्क के व्हाइट प्लेन्स में आर्कबिशप स्टेपिनाक हाई स्कूल में पढ़ाई की. 1961 में चिप ने एक वर्ष के लिए कनेक्टिकट के हार्टफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन किया.

उनका गाना एंजल ऑफ द मॉर्निंग का भी अपना एक लंबा इतिहास रहा और 1981 में जब जूस न्यूटन ने इसे हॉट 100 चार्ट पर चौथे नंबर पर पहुंचाया तो यह अपने चरम पर पहुंच गया. यह गाना एसी चार्ट पर भी नंबर वन पर पहुंचा और कंट्री रेडियो पर भी चार्ट में शामिल रहा. यह गाना मूल रूप से 1967 में एवी सैंड्स द्वारा रिकॉर्ड किया गया था लेकिन उस समय इसे ज्यादा लोकप्रियता नहीं मिली. इसका पहला हिट संस्करण मेरिलि रश का था, जो 1968 में चौथे नंबर पर पहुंचा था. बाद में इसे नीना सिमोन, ओलिविया न्यूटन-जॉन और द प्रिटेंडर्स जैसे अन्य कलाकारों ने भी रिकॉर्ड किया.

'हुई गुम यादें' : नया मेडिकल ड्रामा

भारतीय टेलीविजन पर मेडिकल ड्रामा हमेशा सीमित दायरे में ही नजर आए हैं, जहां 'संजीवनी' और 'दिल मिल गए' जैसे शो ने अपनी अलग पहचान बनाई. अब सोनी सब का नया शो 'हुई गुम्म यादें - एक डॉक्टर, दो जिंदगियां' इस परंपरा को नई दिशा देने का दावा करता दिख रहा है. 6 अप्रैल 2026 से प्रसारित होने वाला यह शो सिर्फ एक डॉक्टर की पेशेवर यात्रा नहीं, बल्कि उसकी टूटी हुई पहचान और बिखरे रिश्तों को फिर से जोड़ने की कहानी है.

इतालवी सीरीज डॉक नेल्ले ट्यू मनी पर आधारित यह कहानी डॉ. देव मेहता के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक हादसे के बाद अपनी जिंदगी के आठ अहम साल भूल जाते हैं. यही मोड़ इस शो को साधारण ड्रामा से अलग बनाता है. एक सफल, आत्मविश्वासी डॉक्टर का अचानक अपने ही अतीत से अनजान हो जाना, उसे भावनात्मक और पेशेवर दोनों स्तरों पर चुनौती देता है.

अभिनय की बात करें तो इकबाल खान इस शो की सबसे बड़ी ताकत साबित हो सकते हैं. उनके हिस्से में एक जटिल किरदार है, जिसमें उन्हें दो अलग-अलग मानसिक अवस्थाओं को जीना है. वहीं गुलकी जोशी का गंभीर भूमिका में आना शो को भावनात्मक मजबूती देता है. नई कलाकार सृष्टि सिंह भी कहानी में ताजगी जोड़ती नजर आती हैं. दरअसल,शो की सबसे बड़ी कसौटी इसकी यथार्थवाद और संतुलन होगी. कुल मिलाकर, 'हुई गुम यादें' में टीवी के पारंपरिक ढांचे को तोड़ने की क्षमता नजर आती है.

गोवा में फिर से अपनी दुनिया बसाएंगी अनुपमा

स्टार प्लस के शो अनुपमा में अनुपमा का किरदार निभा रही रूपाली गांगुली ने मौजूदा ट्रैक के बारे में कुछ दिलचस्प बातें शेयर कीं, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे एक बार फिर वह अपनी जिंदगी को नए सिरे से संवार रही है. रूपाली गांगुली ने बताया कि कहानी कैसे आगे ब?ती है और दर्शकों को देखने को मिलेगा कि कैसे वह गोवा में अपना कैफे

खोलने के सपने को पूरा करते हुए नई चुनौतियों का सामना करती हैं. रूपाली ने बताया, लीप के बाद अनुपमा की जिंदगी ने एक बिल्कुल अलग मोड़ ले लिया है और अब वह एक नए शहर गोवा में अपनी जिंदगी को फिर से शून्य से शुरू करने की कोशिश कर रही है. वह जो भी काम सामने आ रहा है उसे कर रही है, चाहे वह होटल स्टाफ के रूप में काम करना हो या साफ-सफाई में मदद करना, क्योंकि इस वक्त उसके लिए सर्वाइवल और आगे बढ़ना सबसे ज्यादा मायने रखता है. मेरे लिए यह फेज इसलिए इमोशनल है क्योंकि इतना सब कुछ झेलने के बाद भी अनुपमा ने उम्मीद नहीं छोड़ी है. रूपाली गांगुली ने बताया कि दर्शकों को क्या देखने को मिलेगा, दर्शक अनुपमा के संघर्ष, उसके अकेलेपन और उसकी उस खामोश ताकत को देखेंगे जो वह इस अंजान शहर में खुद को ढालने के लिए लगा रही है. अनुपमा ने हमेशा किसी न किसी मकसद के जरिए अपनी पहचान बनाई है चाहे वह डांस हो, बस्ती के लिए खड़े होना हो या अनु की रसोई% चलाना. और अब गोवा में, वह एक बार फिर कैफे बनाने के अपने सपने के जरिए उसी मकसद की तलाश कर रही है. रूपाली गांगुली ने कहा, एक कलाकार के तौर पर अनुपमा के इस नाजुक लेकिन उम्मीदों से भरे पहलू को निभाना मेरे लिए बहुत खास है, और मुझे सच में उम्मीद है कि दर्शक उसके इस सफर से जुड़े रहेंगे और इस नए फेज में भी उसे अपना पूरा साथ देंगे.

कलाकारों ने साझा की राम नवमी मनाने की अपनी योजनाएँ

राम नवमी, भगवान राम के जन्म का पावन पर्व, भक्ति, धर्म और आध्यात्मिक चिंतन का समय होता है. देशभर में श्रद्धालु इस दिन पूजा, रामायण पाठ, भजन और पारंपरिक रीति-रिवाजों के माध्यम से सत्य और मर्यादा का पालन करते हैं. व्यस्त शूटिंग शेड्यूल के बावजूद, के कलाकार अपनी परंपराओं से जुड़े रहते हैं और पूरे समर्पण के साथ इस पर्व को मनाते हैं. इस वर्ष वे शूटिंग के साथ-साथ राम नवमी कैसे मना रहे हैं, यह साझा कर रहे हैं पारस अरोड़ा (घरवाली पेड़वाली में जीतू) और सानंद वर्मा (भाबीजी घर पर हैं 2.0 में अनोखे लाल सक्सेना) . पारस अरोड़ा कहते हैं, राम नवमी मेरे दिल के बहुत करीब रही है. बचपन में हमारा परिवार इसे बड़ी श्रद्धा से मनाता था. मुझे याद है मेरी माँ सुबह जल्दी उठकर घर के मंदिर को फूलों से सजाती थीं और भजन चलते रहते थे. हम बच्चे आरती और स्वादिष्ट प्रसाद का बेसब्री से इंतजार करते थे. इस साल, लंबी शूटिंग के बावजूद, मैं दिन की शुरुआत छोटी पूजा और रामायण के कुछ श्लोकों के पाठ से करता हूँ. मैं सात्विक भोजन करता हूँ और हल्का खाना खाता हूँ. प्रोडक्शन टीम भी मुझे प्रार्थना के लिए समय देती है. राम नवमी मुझे भगवान राम के आदर्शों- धैर्य, विनम्रता और धर्म-की याद दिलाती है, जिन्हें मैं अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करता हूँ. सानंद वर्मा कहते हैं, मेरे लिए राम नवमी सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि बचपन की यादों से जुड़ी भावना है. पहले हमारे मोहल्ले में रामायण पाठ और झांकी होती थी मैं उनमें भाग लेता था और बहुत खुशी महसूस करता था. आज भी, व्यस्तता के बावजूद, मैं पूरे मन से यह दिन मनाता हूँ. मैं सुबह पूजा करता हूँ, समय मिलने पर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करता हूँ और मंदिर जाता हूँ. मैं हल्का भोजन करता हूँ और कभी-कभी उपवास भी रखता हूँ.

तमन्ना भाटिया का ब्यूटी सीक्रेट, सिंपल रूटीन से दिनभर ग्लोइंग स्किन

बॉलीवुड और साउथ फिल्म इंडस्ट्री की मशहूर अदाकारा तमन्ना भाटिया अपनी खूबसूरती और बेदाग त्वचा के लिए अक्सर सुर्खियों में रहती हैं. हाल ही में सामने आई जानकारी के अनुसार, उनकी चमकदार स्किन का राज किसी महंगे ब्यूटी ट्रीटमेंट में नहीं, बल्कि एक बेहद सिंपल और अनुशासित रूटीन में छिपा है.

तमन्ना अपनी स्किन को हेल्दी रखने के लिए सबसे ज्यादा ध्यान हाइड्रेशन पर देती हैं. वह दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीती हैं, जिससे उनकी त्वचा अंदर से हाइड्रेट रहती है और नेचुरल ग्लो बना रहता है. इसके अलावा, वह अपने स्किनकेयर में हल्के और केमिकल-फ्री प्रोडक्ट्स को प्राथमिकता देती हैं, ताकि त्वचा पर कोई नुकसान न हो. एक्ट्रेस का मानना है कि क्लीन स्किन ही खूबसूरती की असली पहचान है. इसलिए वह दिन में दो बार चेहरा साफ करती हैं और कभी भी मेकअप लगाकर नहीं सोतीं. सोने से पहले मेकअप पूरी तरह हटाना उनकी आदत में शामिल है. इसके साथ ही, वह रोजाना मॉइश्चराइजर और सनस्क्रीन का इस्तेमाल करती हैं, जिससे त्वचा धूप और प्रदूषण के असर से सुरक्षित रहती है.तमन्ना भाटिया घरेलू नुस्खों पर भी भरोसा करती हैं. वह समय-समय पर बेसन, दही और हल्दी से बने फेस पैक का इस्तेमाल करती हैं.

टीवी पर धमाका : 'कल्कि 2898 ए.डी.' और 'इमरजेंसी' का प्रीमियर

टीवी दर्शकों के लिए इस हफ्ते एंटरटेनमेंट का डबल डोज मिलने वाला है. ब्लॉकबस्टर फिल्म 'कल्कि 2898 ए.डी.' और बहुचर्चित फिल्म 'इमरजेंसी' का प्रीमियर अलग-अलग चैनलों पर किया जाएगा, जिससे दर्शकों को घर बैठे शानदार सिनेमा का अनुभव मिलेगा. नाग अश्विन के निर्देशन में बनी 'कल्कि 2898 ए.डी.' का प्रीमियर 27 मार्च को शाम 7:30 बजे ज़ी एक्शन पर होगा. यह फिल्म पौराणिक और भविष्य की कहानी को एक साथ जोड़ती है. फिल्म में अमिताभ बच्चन अश्वत्थामा के किरदार में नजर आते हैं, जिन्हें अमर रहने का श्राप मिला है. वहीं दीपिका पादुकोण एक ऐसी माँ की भूमिका में हैं, जो कल्कि अवतार को जन्म देने वाली है, जबकि प्रभास भैरव के रूप में एक निडर योद्धा का किरदार निभाते हैं. शानदार वीएफएक्स, भव्य सेट और दमदार कहानी इस फिल्म को खास बनाते हैं. वहीं, कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' का प्रीमियर 28 मार्च को शाम 7:30 बजे अनमोल सिनेमा पर किया जाएगा.

यह फिल्म 1975 के उस दौर को दर्शाती है, जब देश में इमरजेंसी लागू हुई थी और लोकतंत्र पर कई तरह की पाबंदियां लगाई गई थीं. कंगना रनौत ने इसमें पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाई है.